रही हैं। इम्पोर्टिड फरटिलाइजर दो सो रुपये टन आता है, सिंधरी में जो तैयार होता है वहां 370 रूपये फी टन के हिसाब से तैयार होता है और किसान को जो मिलता है वह 436 रुपये फी टन के हिसाब से मिलता है। मैं जानना चाहता हूं कि क्या सरकार दाम भी कम करने के बारे में सोच रही है, यदि हां तो कब तक और कितने दाम कम किये जायेंगे ?

श्री कपूर सिंह : कभी नहीं होगा।

श्री शाहनवाज खां : जैसे जैसे उसकी मिकदार बढ़ती जायेगी, प्रोडकशन बढ़ेगा, उम्मीद है कीमतें भी कम होंगी।

श्री विश्राम प्रसाद : यह क्या जबाव हुआ ?

अध्यक्ष महोदय : जवाब तो इधर से आ गया था।

श्री क० ना० तिवारी : फर्टिलाइजर फैक्ट्री लगाने में अभी देर है और प्रोडकशन बढ़ाने के लिये फर्टिलाइजर जरूरी है। जो कमी है उसको पुरा करने के लिये सरकार बाहार से मंगाने का क्या प्रबंध कर रही है और कब तक वह आ जायेगा ?

श्री शाहनवाज खां : फर्टिलाइजर की तलाश कर रहे हैं दुनिया में कहां मिल सकता है। फार्टिलाइजर की आज दूनिया में काफी कमी है। विदेशी मुद्रा जो है उसकी भी कुछ कमी है।

श्री बृजराज सिंह : अध्यक्ष महोदय, यह उत्तर दिया जा रहा है या खाली मजाक किया जा रहा है कि तलाश की जायेगी और जब प्रोडकशन बढ़ेगा तब कीमतें कम हो जायेंगे।

अध्यक्ष महोदय: इस बारे में तो इतनी नाराजगी नहीं होनी चाहिये कि तलाश की जा रही है दूसरी गवर्नमेंटों से खत व किताबत कर के ही देखना है कि कहां से मिल सकता है।

श्री बृजराज सिंह: इस का उत्तर तो यह होता है कि ऐसा ऐसा किया गया है, पत्र व्यवहार कर रहे हैं और उन का जवाब आने पर बतलायेंगे। गवर्नमेंट तलाश करेगी के क्या माने होते हैं।

अध्यक्ष महोदय : उन्होंने कहा कि तलाश कर रहे हैं। आप जब इस तरफ आयेंगे और जवाब देगें तब ठीक जवाब दीजियेगा।

Shri Rameshwar Tantia: What is the total production of fertiliser and what is the consumption and how much do we import?

Shri C. Subramaniam: The production in the country this year would be about three lakh tons nitrogen; we will be importing 3.5 lakh tons of nitrogen—and the demand in the country is round about 1.2 to 1.4 million tons of nitrogen.

श्रीमती सहोदरा बाई राव: क्या माननीय मंत्री महोदय बतलाने की कृपा करेंगे कि मध्य प्रदेश में उर्वरक के कितने कारखाने हैं और अगर नहीं हैं तो क्या वह उन को वहां बनाने के लिये तैयार हैं या नहीं।

Shri C. Subramaniam: There is no factory at present. The question whether any new factory will be put up there might be put to the Petroleum Ministry.

Luxury Hotels in India

\+

*157. **Shri S. C. Samanta:**
Shri Rameshwar Tantia:
Shri P. C. Borooah:
Shri P. R. Chakraverti:
Shrimati Tarkeshwari Sinha:
Shri Indrajit Gupta:
Shri D. C. Sharma:

Shri Solanki:
Shri P. K. Deo:
Shri Narasimha Reddy:
Shri R. Barua:
Shri Raghunath Singh:
Shri P. Venkatasubbaiah:
Shri Ravindra Varma:
Shri Mohan Swarup:
Shri Narindra Singh Mahida:

Will the Minister of **Transport** be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 472 on the 2nd March 1965, regarding finalisation of an agreement with M|S Hilton Hotels International of U.S.A., and state:

(a) whether the official Committee has given its findings for the establishment of a number of luxury hotels in India;

(b) if so, its main findings; and

(c) the final decision taken thereon?

The Minister of Transport (Shri Raj Bahadur) (a) Yes, Sir.

(b) and (c). It has been decided that the Indian party who has applied for collaboration with Hiltons may be asked to negotiate with them and submit its final proposals for the approval of Government.

Shri S. C. Samanta: How many of the existing hostels are proposed to be turned into luxury hotels?

Shri Raj Bahadur: The question refers to collaboration with Hilton hotels, not hostels. The proposal that we have before us for collaboration had emanated from a private party known as Messrs. Shiv Sagar and Co. who have acquired the late Gwalior Palace property in Bombay.

Shri S. C. Samanta: May I know the names of countries from which this proposal has come?

Shri Raj Bahadur: Hiltons come from America.

श्री रामेश्वर टांटिया: प्रश्न में हिल्टन की जगह पर मिल्टन छप गया मालूम होता है। मैं जानना चाहता हूं कि यह हिल्टन है या मिल्टन है। साथ ही जो दूसरे बड़े बड़े होटल हैं जैसे कि पैन अमेरिकन हैं, शेरटन होटल है, जो कि हिल्टन से भी अच्छी सार्विस दे सकते हैं उन से भी सरकार नेगोशिएशन करेगी।

श्री राज बहादुर: इस सवाल में जो हवाल दिया गया है वह हिल्टन होटल का दिया गया है मिल्टन की "पैराडाइज लास्ट" का नहीं है।

श्री रामेश्वर टांटिया: यह गलती हो सकती है। मेरा दूसरा सवाल यह था कि जो दूसरे बड़े होटल हैं क्या उनसे भी सरकार बातचीत करेगी कि क्या वह हिल्टन से बैटर कंडिशन दे सकेंगे।

श्री राज बहादुर: जहां तक बात चीत करने का सवाल है जो प्रस्ताव हमारे सामने आये हैं वह इंटर कांटिनेन्टल होटल और हिल्टन होटलज के आये हैं और उन को मेरिट्स पर देखा जायेगा।

Shri P. C. Borooah: Is it a fact that this Hiltons International want an operating profit of 33.33 per cent and to repatriate to the extent of Rs. 1.04 crores annually, complete control of management in their hands and a guarantee to book 12 lakhs of tourists and if so are the Government considering these to be derogatory terms?

Shri Raj Bahadur: It is a multipurpose question and I will try to answer.

Mr. Speaker: He may answer one part.

Shri Raj Bahadur: With regard to the return to Hiltons, the amount of Rs. 1.4 crores reported to the hon. Member is absolutely out of proportion. The operating profit on a standard 400-room hotel would be of the order of about 564,000 dollars. One-third of that would be in the vicinity of 188,000 dollars out of which they

will have to spend 50,000 for their promotional and advertising efforts. The remainder will be subjected to tax. The total including amount spent on promotion would come in the vicinity of about 120,000 dollars in all. It has not yet been settled whether they will get one-third or one-fourth, which is a matter for negotiation between the parties concerned.

Shri P. R. Chakraverti: May I know whether it is a fact that the Government has set up a hotel corporation of its own, and when the private sector is managing hotels all over India very efficiently, how does the question of foreign collaboration come in, in this context?

Shri Raj Bahadur: Collaboration with a foreign hotel does not cast any reflection on the efficiency or the standard of maintenance of our hotels or the quality of management of our hoteliers. It is a matter where we want to take advantage of a chain of hotels all over the world which creates its own traffic and brings other advantages also in train. It also helps in maintaining and improving of standards.

Shrimati Tarkeshwari Sinha: May I know whether it is a fact that the Secretaries Committee which was appointed to look into this matter has not recommended that there should be any collaboration of management with Hiltons, as reported in the press, and why, in spite of that, the Government at Cabinet level decided to give them this collaboration, on principle?

Shri Raj Bahadur: The Cabinet, of course, is the ultimate authority, but I may inform the hon. Member that the Secretaries Committee which was appointed to go into this question never made any recommendation of the type which she was alluding to. It was appointed to go into the whole question, and they have recommended certain basic premises on the basis of which the negotiations have to be conducted.

Shri R. Barua: May I know whether the Government have examined the main benefits that will accrue out of the collaboration with the hoteliers of international repute and, if so, what was the final criterion which induced the Government to go into this collaboration?

Shri Raj Bahadur: May I just recount the advantages? One of the big advantages is that it will create its own traffic; it will provide a sales network for tourism, joint advertisement for tourist promotion, and above all, it will enable us to earn in the vicinity of about a crore of rupees in foreign exchange, besides providing a good network of hotels.

श्री रघुनाथ सिंह: आगरा और वाराणसी में बहुत काफी लोग बाहर से आते हैं। वाराणसी में एक होटल है जो 85 रु० रोज चार्ज करता है। मैं जानना चाहता हूं कि क्या कोई सरकारी या गैर-सरकारी योजना है जिस में कोई अच्छा और सस्ता होटल वहां दिया जा सके ?

श्री राज बहादुर: जो होटल सरकारी क्षेत्र में हैं उन का एक कारपोरेशन स्थापित किया गया है। उस के ध्यान में वाराणसी की आवश्यकता है और मैं विश्वास करता हूं कि वह इस कठिनाई को हल करने की चेष्टा करेगा।

श्री के० दे० मालवीय: मैं जानना चाहता हूं कि क्या अब भी वक्त रह गया है जब कि सरकार बहुत सीरियसली गौर करे और सारी स्कीम को रद्द कर दे और हिन्दुस्तान की टैलेन्ट की सहायता से यहां पर बाहर का ट्रैफिक बुलाया जाये और हम ही किसी प्रकार अपनी स्वावलम्बिता के आधार पर अपने होटल खुद खोलें। मैं जानना चाहता हूं कि वक्त रह गया है या कि इस का समय अब बीत चुका है ?

श्री राज बहादुर : टूरीज्म जो है, खास तौर से विदेशी पर्यटकों का जो कि अपने देश में आते हैं उनके संबंध में मैं कहना चाहता हूं कि यदि उन लोगों को विदेशी होटलों का स्टेन्डर्ड यहां मिलता है और उससे हम को सेपरेट ट्रैफिक मिलता है तो बड़ा लाभ होता है अपनी इंडस्ट्री को । जहां तक इसका सवाल है कि हम अपनी लोकल या देशी टैलेन्ट को एन्करेज नहीं करते हैं, उस के लिये मैं निवेदन करना चाहता हूं कि इस में उन पर किसी प्रकार का कोई लांछन नहीं है। बल्कि यह जानना चाहिये कि 36 होटेल्स हिल्टन्स के अनेक देशों में है, इसी प्रकार इंटर कांटिनेन्टल होटेल्स की चैन है । यह न सिर्फ पश्चिमी देशों में हैं बल्कि यूगोस्लाविया जैसे देश में स्थापित हुए हैं। वहां भी इस बात को प्रोत्साहन मिला है और इस को किया गया है । हमारे देश में भी इंटर कांटिनेन्टल होटेल जो कि अमरीका का है उस ने एक निजी क्षेत्र के होटेलियर से कोलेबोरेशन किया है और दिल्ली में एक होटल बन कर तैयार हुआ है ।

श्री बृजराज सिंह: मैं मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि जो यह बड़े लग्जरी होटेल्स है इनमें और ऐयाशियों के साथ-साथ अन्न के साथ भी जो ऐयासी होती है, उसको रोकने के लिये वे क्या कदम उठा रहे हैं, और क्या वे इन चीजों को ध्यान में रख कर इन बड़े होटेलों के लिये इजाजत देगें ।

श्री राज बहादुर : ऐयाशी तो कहीं भी हो बुरी है, उसको रोकने के लिये होम मिनिस्ट्री इन्तिजाम कर सकती है ।

श्री बृजराज सिंह : मेरा प्रश्न यह था कि और दूसरी ऐयाशी तो हम बरदाश्त कर सकते हैं, लेकिन अन्य के साथ ऐयाशी हम बरदाश्त नहीं कर सकते, क्या आपने इस बात को ध्यान में रखा है इन होटलों की इजाजत देते समय ?

श्री राज बहादुर : अन्न के साथ ऐयाशी कैसी ?

श्री बृजराज सिंह : हमारा यह चैलेंज है कि बड़े होटलों में रोज इतना अन्न फेंका जाता है जो कि एक बड़े गांव के लिये काफी हो । आप बड़े होटल खोल कर देश का क्या करना चाहते हैं ? क्या यह बात आपके ध्यान में है ?

Shri Vidya Charan Shukla: Is it a fact that two ministries of the Government of India are competing with each other in the construction of these luxury hotels? Have Government decided which of the two will be in charge of construction and running of these luxury hotels? If no decision has been arrived at, why?

Shri Raj Bahadur: It is true that the Works and Housing Ministry is in charge of Ashoka Hotel and Janpath Hotel and they are proposing to set up one or two hotels more. But essentially the work of filling up the gap in hotel accommodation in the country has been assigned to the Hotel Corporation of India, which comes under the Transport Ministry. There is no doubt that there will be co-ordination between the two.

Dr. L. M. Singhvi: On what specific grounds do the Indian hoteliers oppose this proposal and how do the Government meet their points?

Shri Raj Bahadur: I would like to disabuse the mind of the hon. member that there is general opposition from the hoteliers. In fact, it is one of the private hoteliers who are now trying to set up a hotel in collaboration. Apart from that, opinions of the hotel industry are not uniform or unanimous on this point. Most of them favour it; others might reject it.

Dr. L. M. Singhvi: My question was, what are the specific grounds of their opposition and how Government propose to meet them?

Shri Raj Bahadur: I would not like to be uncharitable, but some parties who have already secured foreign collaboration perhaps are not very keen that other parties also should seek collaboration. There may be the question of personal interest coming

in. But I see no logical reason whatsoever in refusing Hiltons or Sheratons to come into this field in our country.

गाजीपुर और बलिया के बीच गंगा पर पुल

158. + **श्री प्रकाशवीर शास्त्री :**
श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती :
श्री रामेश्वर टांटिया :
श्री स० चं० सामन्त :
श्री सुबोध हंसदा :
श्री सरजू पाण्डेय :

क्या **परिवहन** मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या गाजीपुर और बलिया के बीच गंगा नदी पर पुल बनाये जाने के स्थान के बारे में अन्तिम निर्णय कर लिया गया है ; और

(ख) यदि नहीं, तो अन्तिम निर्णय कब तक कर लिया जायेगा ?

The Deputy Minister in the Ministry of Transport (Shri Mohiuddin): A statement is laid on the Table of the House.

STATEMENT

(a) and (b). No, Sir. In the several representations made for the construction of the proposed bridge over the Ganga between Ghazipur and Ballia, rival claims have been made for the location of this bridge either at Ghazipur or at Buxar. In either case, the bridge would fall on a State road and as such it would be the responsibility of the State Governments concerned. However, in order to facilitate the consideration of the suitability of investment for the proposed bridge, the Directorate of Transport Research of the Ministry of Transport were asked to carry out a cost-benefit study. The investigations have practically been completed and necessary information collected. In order to finalise the report, the officers of the Ministry of Transport propose to have discussions with the officers of the Uttar Pradesh Public Works Department shortly. The matter will be considered further after a report on this study becomes available.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : जो यह पुल गाजीपुर और बलिया के बीच गंगा पर बनने वाला है इसकी चर्चा पिछले सात वर्षों से बराबर सरकार के विचार का विषय रही है । मैं जानना चाहता हूं कि क्या स्थान का निर्णय नहीं हो पाया या उपयुक्त स्थान के अभाव में अथवा कुछ राजनीतिक दबाव बीच में बाधक बन रहा है, इसके कारण यह काम क्यों रुका हुआ है ?

परिवहन मंत्री (श्री राज बहादुर) : गंगा पर तीस मील की दूरी में बक्सर में या गाजीपुर में पुल कहां बनाया जाए, इस बारे में विवाद है । इसलिए डाइरेक्टरेट आफ ट्रांसपोर्ट रिसर्च को यह काम सौंपा गया है कि वह इस बात की छानबीन करे कि लागत के ऊपर लाभ कहां अधिक होगा । इसकी जांच होने के बाद निर्णय लिया जा सकेगा जैसा कि सवाल के जवाब में बताया गया है ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : विवरण में यह बताया गया है कि गाजीपुर और बलिया के बीच बनने वाले इस पुल की जांच पड़ताल का कार्य पूरा कर लिया गया है और सूचनाएं सरकार के पास आ गयी हैं । तो क्या सरकार ने यह अनुमान लगाया है कि इस प्रस्तावित पुल के बनाने पर कितनी राशि व्यय की जाएगी ?

श्री राज बहादुर : जहां तक जांच पड़ताल का सवाल है वह काम पूरा हो गया है, लेकिन अभी रिपोर्ट बन रही है, जैसा कि सवाल के जवाब में बताया गया, रिपोर्ट फाइनालाइज हो रही है । जब वह हमारे पास आ जाएगी तो उस पर विचार किया जाएगा ।

श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती : क्या सरकार अपने कर्मचारियों की इस कच्छप गति को रोक कर वहां पुल के बनने से जो लाभ हो सकता है उसको जल्द से जल्द पहुंचाने के सवाल पर विचार करेगी ?

श्री राज बहादुर : दो जगहों के बारे में विवाद है । दोनों में से किस जगह बनाने से